श्रीकृष्णद्वैपायन कृत ब्रह्मसूत्र ब्रह्मसूत्र नामावलिः

प्रथमाध्यायः ॥ 1 ॥

प्रथमः पादः ॥ 1-1 ॥

जिज्ञासाधिकरणम्॥ 1-1-1 ॥

ॐ ॐ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा ॐ ॥ 1-1-1-1 ॥

जन्माधिकरणम् ॥ 1-1-2 ॥

ॐ जन्माद्यस्य यतः ॐ ॥ 1-1-2-02 ॥

शास्त्रयोनित्वाधिकरणम्॥ 1-1-3 ॥

ॐ शास्त्रयोनित्वात् ॐ ॥ 0-1-1-3-3 ॥

समन्वयाधिकरणम् ॥ 1-1-4 ॥

ॐ तत्तु समन्वयात् ॐ ॥ 1-1-4-4 ॥

ईक्षत्यधिकरणम्॥ 1-1-5 ॥

ॐ ईक्षतेर्नाशब्धम् ॐ ॥ 1-1-5-5 ॥

ॐ गौणश्चेन्नात्मशब्दात् ॐ ॥ 1-1-5-6 ॥

ॐ तन्निष्ठस्य मोक्षोपदेशात् ॐ ॥ 1-1-5-7 ॥

ॐ हेयत्वावचनाच्च ॐ ॥ 1-1-5-8 ॥

ॐ स्वाप्ययात् ॐ ॥ 1-1-5-9 ॥

ॐ गतिसामान्यात् ॐ ॥ 1-1-5-10 ॥

ॐ श्रुतत्वाच्च ॐ ॥ 1-1-5-11 ॥

आनन्दमयाधिकरण॥ 1-1-6 ॥

ॐ आनन्दमयोऽभ्यासात् ॐ ॥ 1-1-6-12 ॥

ॐ विकारशब्दान्नेति चेन्न प्राचुर्यात् ॐ ॥ 1-1-6-13 ॥

ॐ तद्धेतुव्यपदेशाच्च ॐ ॥ 1-1-6-14 ॥

ॐ मान्त्रवर्णिकमेव च गीयते ॐ ॥ 1-1-6-15 ॥

ॐ नेतरोऽनुपपत्तेः ॐ ॥ 1-1-6-16 ॥

ॐ भेदव्यपदेशाच्च ॐ ॥ 1-1-6-17 ॥

ॐ कामाच्च नानुमानापेक्षा ॐ ॥ 1-1-6-18 ॥

ॐ अस्मिन्नस्य च तद्योगं शास्ति ॐ ॥ 1-1-6-19 ॥

अन्तस्थत्वाधिकरणम् ॥1-1-7॥

ॐ अन्तस्तद्धर्मोपदेशात् ॐ ॥ 1-1-7-20 ॥

ॐ भेदव्यपदेशाच्चान्यः ॐ ॥ 1-1-7-21 ॥

आकाशाधिकरणम् ॥1-1-8॥

ॐ आकाशस्तल्लिङ्गात् ॐ ॥ 1-1-8-22 ॥

प्राणाधिकरणम्॥1-1-9॥

ॐ अत एव प्राणः ॐ ॥ 1-1-9-23 ॥

ज्योतिरधिकरणम्॥1-1-10॥

ॐ ज्योतिश्चरणाभिधानात् ॐ ॥ 1-1-10-24 ॥

छन्दोऽभिधानाधिकरणम्॥1-1-11॥

ॐ छन्दोऽभिधानान्नेति चेन्न तथा चेतोऽर्पणनिगदात् तथा हि दर्शनम् ॐ 1-1-11-25 ॥

ॐ भूतादिपादव्यपदेशोपपत्तेश्चैवम् ॐ ॥ 1-1-11-26 ॥

ॐ उपदेशभेदान्नेति चेन्नोभयस्मिन्नप्यविरोधात् ॐ ॥ 1-1-11-27॥

पादान्त्यप्राणाधिकरणम्॥1-1-12॥

ॐ प्राणस्तथाऽनुगमात् ॐ ॥ 1-1-12-28 ॥

ॐ शास्त्रदृष्ट्यातूपदेशो वामदेववत् ॐ ॥ 1-1-12-30 ॥

ॐ जीवमुख्यप्राणलिङ्गान्नेति चेन्नोपासात्रैविध्यादाश्रितत्वादिह तद्योगात् ॐ ॥ 1-1-12-31 ॥

द्वितीयः पादः ॥1-2॥

सर्वगतत्वाधिकरणम्॥1-2-1॥

ॐ सर्वत्र प्रसिद्धोपदेशात् ॐ ॥ 1-2-1-32 ॥

ॐ विवक्षितगुणोपपत्तेश्च ॐ ॥ 1-2-1-33 ॥

ॐ अनुपपत्तेस्तु न शारीरः ॐ ॥ 1-2-1-34 ॥

ॐ कर्मकर्तृव्यपदेशाच्च ॐ ॥ 1-2-1-35 ॥

ॐ शब्दविशेषात् ॐ ॥ 1-2-1-36 ॥

ॐ स्मृतेश्च ॐ ॥ 1-2-1-37 ॥

ॐ अर्भकौकस्त्वात् तद्व्यपदेशाच्च नेति चेन्न निचाय्यत्वादेवं व्योमवच्च ॐ ॥1-2-1-38॥

ॐ सम्भोगप्राप्तिरिति चेन्न वैशेष्यात् ॐ ॥ 1-2-1-39 ॥

अत्तृतत्वाधिकरणम्॥1-2-2॥

ॐ अत्ताचराचरग्रहणात् ॐ ॥ 1-2-2-40 ॥

ॐ प्रकरणाच्च ॐ ॥ 1-2-2-41 ॥

गुहाधिकरणम्॥1-2-3॥

ॐ गुहां प्रविष्टावात्मानौ हि तद्दर्शनात् ॐ ॥ 1-2-3-42 ॥

ॐ विशेषणाच्च ॐ ॥ 1-2-3-43 ॥

अन्तराधिकरणम्॥1-2-4॥

ॐ अन्तर उपपत्तेः ॐ ॥ 1-2-4-44 ॥

ॐ स्थानादिव्यपदेशाच्च ॐ ॥ 1-2-4-45 ॥

ॐ सुखविशिष्टाभिधानादेव च ॐ ॥ 1-2-4-46 ॥

ॐ श्रुतोपनिषत्कगत्यभिधानाच्च ॐ ॥ 1-2-4-47 ॥

ॐ अनवस्थितेरसम्भवाच्च नेतरः ॐ ॥ 1-2-4-48 ॥

अन्तर्याम्यधिकरणम्॥1-2-5॥

ॐ अन्तर्याम्यधिदैवादिषु तद्धर्मव्यपदेशात् ॐ ॥ 1-2-5-49 ॥

ॐ न च स्मार्तमतद्धर्माभिलापात् ॐ ॥ 1-2-5-50 ॥

ॐ शारीरश्चोभयेऽपि हि भेदेनैनमधीयते ॐ ॥ 1-2-5-51 ॥

अदृश्यत्वाधिकरणम्॥1-2-6॥

ॐ अदृश्यत्वादिगुणको धर्मोक्तेः ॐ ॥ 1-2-6-52 ॥

ॐ विशेषणभेदव्यपदेशाभ्यां नेतरौ ॐ ॥ 1-2-6-53 ॥

ॐ रूपोपन्यासाच्च ॐ ॥ 1-2-6-54 ॥

वैश्वनराधिकरणम् ॥ 1-2-7 ॥

ॐ वैश्वानरः साधारणशब्दविशेषात् ॐ ॥ 1-2-7-55 ॥

ॐ स्मर्यमाणमनुमानं स्यादिति ॐ ॥ 1-2-7-56 ॥

ॐ शब्दादिभ्योऽन्तः प्रतिष्ठानान्नेति चेन्न तथा दृष्ट्युपदेशादसम्भवात् पुरुषविधमपि चैनमधीयते ॐ ॥ 1-2-7-57 ॥

ॐ अत एव न देवता भूतं च ॐ ॥ 1-2-7-58 ॥

ॐ साक्षादप्यविरोधं जैमिनिः ॐ ॥ 1-2-7-59 ॥

ॐ अभिव्यक्तेरित्याश्मरथ्यः ॐ ॥ 1-2-7-60 ॥

ॐ अनुस्मृतेर्बादरिः ॐ ॥ 1-2-7-61 ॥

ॐ सम्पत्तेरिति जैमिनिस्तथा हि दर्शयति ॐ ॥ 1-2-7-62 ॥

ॐ आमनन्ति चैनमस्मिन् ॐ ॥ 1-2-7-63 ॥

तृतीयः पादः ॥ 1-3 ॥

ध्युभ्याधिकरणम् ॥ 1-3-1 ॥

ॐ द्युभ्वाद्यायतनं स्वशब्दात् ॐ ॥ 1-3-1-64 ॥

ॐ मुक्तोपसृप्यव्यपदेशात् ॐ ॥ 1-3-1-65 ॥

ॐ नानुमानमतच्छब्दात् ॐ ॥ 1-3-1-66 ॥

ॐ प्राणभृच्च ॐ ॥ 1-3-1-67 ॥

ॐ भेदव्यपदेशात् ॐ ॥ 1-3-1-68 ॥

ॐ प्रकरणात् ॐ ॥ 1-3-1-69 ॥

ॐ स्थित्यदनाभ्यां च ॐ ॥ 1-3-1-70 ॥

भूमाधिकरणम् ॥ 1-3-2 ॥

ॐ भूमा सम्प्रसादादध्युपदेशात् ॐ ॥ 1-3-2-71 ॥

ॐ धर्मोपपत्तेश्च ॐ ॥ 1-3-2-72 ॥

अक्षराधिकरणम्॥1-3-3॥
ॐ अक्षरमम्बरान्तधृतेः ॐ ॥ 1-3-3-73 ॥
ॐ सा च प्रशासनात् ॐ ॥ 1-3-3-74 ॥
ॐ अन्यभावव्यावृत्तेश्च ॐ ॥ 1-3-3-75 ॥
सदधिकरणम्॥1-3-4॥
ॐ ईक्षतिकर्मव्यपदेशात् सः ॐ ॥ 1-3-4-76 ॥
दहराधिकरणम्॥1-3-5॥
ॐ दहर उत्तरेभ्यः ॐ ॥ 1-3-5-77 ॥
ॐ गतिशब्दाभ्यां तथा हि दृष्टं लिङ्गं च ॐ ॥ 1-3-5-78 ॥
ॐ धृतेश्च महिम्नोऽस्यास्मिन्नुपलब्धेः ॐ ॥ 1-3-5-79 ॥
ॐ प्रसिद्धेश्च ॐ ॥ 1-3-5-80 ॥
ॐ इतरपरामर्शात् स इति चेन्नासम्भवात् ॐ ॥ 1-3-5-81 ॥
ॐ उत्तराच्चेदाविर्भूतस्वरूपस्तु ॐ ॥ 1-3-5-82 ॥
ॐ अन्यार्थश्च परामर्शः ॐ ॥ 1-3-5-83 ॥
ॐ अल्पश्रुतेरिति चेत् तदुक्तम् ॐ ॥ 1-3-5-84 ॥
अनुकृत्यधिकरणम्॥1-3-6॥
ॐ अनुकृतेस्तस्य च ॐ ॥ 1-3-6-85 ॥
ॐ आपि स्मर्यते ॐ ॥ 1-3-6-86 ॥
वामनाधिकरणम्॥1-3-7॥
ॐ शब्दादेव प्रमितः ॐ ॥ 1-3-7-87 ॥
देवताधिकरणम्॥1-3-8॥
ॐ हृद्यपेक्षया तु मनुष्याधिकारत्वात् ॐ ॥ 1-3-8-88 ॥
ॐ तदुपर्यपि बादरायणः सम्भवात् ॐ ॥ 1-3-8-89 ॥
ॐ विरोधः कर्मणेति चेन्नानेकप्रतिपत्तेर्दर्शनात् ॐ ॥ 1-3-8-90 ॥
ॐ शब्द इति चेन्नातः प्रभवात् प्रत्यक्षानुमानाभ्याम् ॐ ॥ 1-3-8-91॥
ॐ अत एव च नित्यत्वम् ॐ ॥ 1-3-8-92 ॥

ॐ समाननामरूपत्वाच्चावृत्तावप्यविरोधो दर्शनात् स्मृतेश्च ॐ ॥ 1-3-8-93 ॥

ॐ मध्वादिष्वसम्भवादनधिकारं जैमिनिः ॐ ॥ 1-3-8-94 ॥

ॐ ज्योतिषि भावाच्च ॐ ॥ 1-3-8-95 ॥

ॐ भावं तु बादरायणोऽस्ति हि ॐ ॥ 1-3-8-96 ॥

अपशूद्राधिकरणम् ॥ 1-3-9 ॥

ॐ शुगस्य तदनादरश्रवणात् तदाऽऽद्रवणात् सूच्यते हि ॐ ॥ 1-3-9-97 ॥

ॐ क्षत्रियत्वावगतेश्चोत्तरत्र चैत्ररथेन लिङ्गात् ॐ ॥ 1-3-9-98 ॥

ॐ संस्कारपरामर्शात् तदभावाभिलापाच्च ॐ ॥ 1-3-9-99 ॥

ॐ तदभावनिर्धारणे च प्रवृत्तेः ॐ ॥ 1-3-9-100 ॥

ॐ श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधात् स्मृतेश्च ॐ ॥ 1-3-9-101 ॥

कम्पनाधिकरणम् ॥ 1-3-10 ॥

ॐ कम्पनात् ॐ ॥ 1-3-10-102 ॥

ज्योतिरधिकरणम् ॥ 1-3-11 ॥

ॐ ज्योतिर्दर्शनात् ॐ ॥ 1-3-11-103 ॥

आकाशाधिकरणम् ॥ 1-3-12 ॥

ॐ आकाशोऽर्थान्तरत्वादिव्यपदेशात् ॐ ॥ 1-3-12-104 ॥

सुषुप्त्यधिकरणम् ॥ 1-3-13 ॥

ॐ सुषुप्त्युत्क्रान्त्योर्भेदेन ॐ ॥ 1-3-13-105 ॥

ब्राह्मणाधिकरणम् ॥ 1-3-14 ॥

ॐ पत्यादिशब्देभ्यः ॐ ॥ 1-3-14-106 ॥

चतुर्थः पादः ॥ 1-4 ॥

अनुमानिकाधिकरणम् ॥ 1-4-1 ॥

ॐ आनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न शरीररूपकविन्यस्तगृहीतेर्दर्शयति च ॐ ॥ 1-4-1-107 ॥

ॐ सूक्ष्मं तु तदर्हत्वात् ॐ ॥ 1-4-1-108 ॥

ॐ तदधीनत्वादर्थवत् ॐ ॥ 1-4-1-109 ॥

ॐ ज्ञेयत्वावचनाच्च ॐ ॥ 1-4-1-110 ॥

ॐ वदतीती चेन्न प्राज्ञो हि ॐ ॥ 1-4-1-111 ॥

ॐ प्रकरणात् ॐ ॥ 1-4-1-112 ॥

ॐ त्रयाणामेव चैवमुपन्यासः प्रश्नश्च ॐ ॥ 1-4-1-113 ॥

ॐ महद्वच्च ॐ ॥ 1-4-1-114 ॥

ॐ चमसवदविशेषात् ॐ ॥ 1-4-1-115 ॥

ज्योतिरुपक्रमाधिकरणम् ॥ 1-4-2 ॥

ॐ ज्योतिरुपक्रमात् तु तथा ह्यधीयत एके ॐ ॥ 1-4-2-116 ॥

ॐ कल्पनोपदेशाच्च मध्वादिवदविरोधः ॐ ॥ 1-4-2-117 ॥

न शङ्ख्योपसङ्ग्रहादिकरणम्(पञ्चजनाधिकरणम्) ॥ 1-4-3 ॥

ॐ न सङ्ख्योपसङ्ग्रहादपि नानाभावादतिरेकाच्च ॐ ॥ 1-4-3-118 ॥

ॐ प्राणादयो वाक्यशेषात् ॐ ॥ 1-4-3-119 ॥

ॐ ज्योतिषैकेषामसत्यन्ने ॐ ॥ 1-4-3-120 ॥

आकाशाधिकरणम् ॥ 1-4-4 ॥

ॐ कारणत्वेन चाकाशादिषु यथाव्यपदिष्टोक्तेः ॐ ॥ 1-4-4-121 ॥

समाकर्षाधिकरणम् ॥ 1-4-5 ॥

ॐ समाकर्षात् ॐ ॥ 1-4-5-122 ॥

ॐ जगद्वाचित्वात् ॐ ॥ 1-4-5-123 ॥

ॐ जीवमुख्यप्राणलिङ्गादिति चेत् तद्व्याख्यातम् ॐ ॥ 1-4-5-124 ॥

ॐ अन्यार्थं तु जैमिनिः प्रश्नव्याख्यानाभ्यामपि चैवमेके ॐ ॥ 1-4-5-125 ॥

ॐ वाक्यान्वयात् ॐ ॥ 1-4-5-126 ॥

ॐ प्रतिज्ञासिद्धेर्लिङ्गमाश्मरथ्यः ॐ ॥ 1-4-5-127 ॥

ॐ उत्क्रमिष्यत एवंभावादित्यौडुलोमिः ॐ ॥ 1-4-5-128 ॥

ॐ अवस्थितेरिति काशकृत्स्नः ॐ ॥ 1-4-5-129 ॥

प्रकृत्यधिकरणम् ॥ 1-4-6 ॥

ॐ प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात् ॐ ॥ 1-4-6-130 ॥

ॐ अभिध्योपदेशाच्च ॐ ॥ 1-4-6-131 ॥

ॐ साक्षाच्चोभयाम्नानात् ॐ ॥ 1-4-6-132 ॥

ॐ आत्मकृतेः परिणामात् ॐ ॥ 1-4-6-133 ॥

ॐ योनिश्च हि गीयते ॐ ॥ 1-4-6-134 ॥

सर्वव्याख्यानाधिकरण् ॥ 1-4-7 ॥

ॐ एतेन सर्वे व्याख्याता व्याख्याताः ॐ ॥ 1-4-7-135 ॥

द्वितीयाध्याय ॥ 2 ॥

प्रथमः पादः ॥ 2-1 ॥

स्मृत्यधिकरणम् ॥ 2-1-1 ॥

ॐ स्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्ग इति चेन्नान्यस्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्गात् ॐ ॥ 2-1-1-136 ॥

ॐ इतरेषां चानुपलब्धेः ॐ ॥ 2-1-1-137 ॥

ॐ एतेन योगः प्रत्युक्तः ॐ ॥ 2-1-1-138 ॥

न विलक्षणत्वाधिकरण् ॥ 2-1-2 ॥

ॐ न विलक्षणत्वादस्य तथात्वं च शब्दात् ॐ ॥ 2-1-2-139 ॥

ॐ दृश्यते तु ॐ ॥ 2-1-2-140 ॥

अभिमान्यधिकरणम् ॥ 2-1-3 ॥

ॐ अभिमानिव्यपदेशस्तु विशेषानुगतिभ्याम् ॐ ॥ 2-1-3-141 ॥

ॐ दृश्यते च ॐ ॥ 2-1-3-142 ॥

असदधिकरणम् ॥ 2-1-4 ॥

ॐ असदिति चेन्न प्रतिषेधमात्रत्वात् ॐ ॥ 2-1-4-143 ॥

ॐ अपीतौ तद्वत्प्रसङ्गादसमञ्जसम् ॐ ॥ 2-1-4-144 ॥

ॐ न तु दृष्टान्तभावात् ॐ ॥ 2-1-4-145 ॥

ॐ स्वपक्षदोषाच्च ॐ ॥ 2-1-4-146 ॥

ॐ तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथाऽनुमेयमिति चेदेवमप्यनिर्मोक्षप्रसङ्गः ॐ ॥ 2-1-4-147 ॥

भोक्त्रधिकरणम्॥2-1-5॥

ॐ एतेन शिष्टापरिग्रहा अपि व्याख्याताः ॐ ॥ 2-1-5-148 ॥

आरम्भणाधिकरणम्॥2-1-6॥

ॐ भोक्त्रापत्तेरविभागश्चेत् स्याल्लोकवत् ॐ ॥ 2-1-6-149 ॥

ॐ तदनन्यत्वमारम्भणशब्दादिभ्यः ॐ ॥ 2-1-6-150 ॥

ॐ भावे चोपलब्धेः ॐ ॥ 2-1-6-151 ॥

ॐ सत्वाच्चावरस्य ॐ ॥ 2-1-6-152 ॥

ॐ असद्व्यपदेशान्नेति चेन्न धर्मान्तरेण वाक्यशेषात् ॐ॥ 2-1-6-153॥

ॐ युक्तेः शब्दान्तराच्च ॐ ॥ 2-1-6-154 ॥

ॐ पटवच्च ॐ ॥ 2-1-6-155 ॥

ॐ यथा प्राणादिः ॐ ॥ 2-1-6-156 ॥

इतरव्यपदेशाधिकरणम्॥2-1-7॥

ॐ इतरव्यपदेशाद्धिताकरणादिदोषप्रसक्तिः ॐ ॥ 2-1-7-157 ॥

ॐ अधिकं तु भेदनिर्देशात् ॐ ॥ 2-1-7-158 ॥

ॐ अश्मादिवच्च तदनुपपत्तिः ॐ ॥ 2-1-7-159 ॥

ॐ उपसंहारदर्शनान्नेति चेन्न क्षीरवद्धि ॐ ॥ 2-1-7-160 ॥

ॐ देवादिवदपि लोके ॐ ॥ 2-1-7-161 ॥

ॐ कृत्स्नप्रसक्तिर्निरवयवत्वशब्दकोपो वा ॐ ॥ 2-1-7-162 ॥

शब्धमूलत्वाधिकरणम्॥2-1-8॥

ॐ श्रुतेस्तुशब्दमूलत्वात् ॐ ॥ 2-1-8-163 ॥

ॐ आत्मनि चैवं विचित्राश्च हि ॐ ॥ 2-1-8-164 ॥

ॐ स्वपक्षदोषाच्च ॐ ॥ 2-1-8-165 ॥

ॐ सर्वोपेता च तद्दर्शनात् ॐ ॥ 2-1-8-166 ॥

ॐ विकरणत्वान्नेति चेत् तदुक्तम् ॐ ॥ 2-1-8-167 ॥

न प्रयोजनत्वाधिकरणम्॥2-1-9॥

ॐ न प्रयोजनवत्त्वात् ॐ ॥ 2-1-9-168 ॥

ॐ लोकवत्तुलीलाकैवल्यम् ॐ ॥ 2-1-9-169 ॥

वैषम्यनैर्घृण्याधिकरणम् ॥ 2-1-10 ॥

ॐ वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथा हि दर्शयति ॐ ॥ 2-1-10-170 ॥

ॐ न कर्माविभागादिति चेन्नानादित्वात् ॐ ॥ 2-1-10-171 ॥

ॐ उपपद्यते चाप्युपलभ्यते च ॐ ॥ 2-1-10-172 ॥

सर्वधर्मोपपत्त्यधिकरणम् ॥ 2-1-11 ॥

ॐ सर्वधर्मोपपत्तेश्च ॐ ॥ 2-1-11-173 ॥

द्वितीयः पादः ॥ 2-2- ॥

रचनानुपपत्त्यधिकरणम् ॥ 2-2-1 ॥

ॐ रचनानुपपत्तेश्च नानुमानम् ॐ ॥ 2-2-1-174 ॥

ॐ प्रवृत्तेश्च ॐ ॥ 2-2-1-175 ॥

ॐ पयोऽम्बुवच्चेत् तत्रापि ॐ ॥ 2-2-1-176 ॥

ॐ व्यतिरेकानवस्थितेश्चानपेक्षत्वात् ॐ ॥ 2-2-1-177 ॥

अन्त्राबावाधिकरणम् ॥ 2-2-2 ॥

ॐ अन्यत्राभावाच्च न तृणादिवत् ॐ ॥ 2-2-2-178 ॥

अभ्युपमाधिकरणम् ॥ 2-2-3 ॥

ॐ अभ्युपगमेऽप्यर्थाभावात् ॐ ॥ 2-2-3-179 ॥

पुरुषाष्माधिकरणम् ॥ 2-2-4 ॥

ॐ पुरुषाश्मवदिति चेत् तथाऽपि ॐ ॥ 2-2-4-180 ॥

ॐ अङ्गीत्वानुपपतेः ॐ ॥ 2-2-4-181 ॥

अन्यथानुपपत्यधिकरणम् ॥ 2-2-5 ॥

ॐ अन्यथाऽनुमितौ च ज्ञशक्तिवियोगात् ॐ ॥ 2-2-5-182 ॥

ॐ विप्रतिषेधाच्चासमञ्जसम् ॐ ॥ 2-2-5-183 ॥

वैशेषिकाधिकरणम् ॥ 2-2-6 ॥

ॐ महद्दीर्घवद्वा ह्रस्वपरिमण्डलाभ्याम् ॐ ॥ 2-2-6-184 ॥

ॐ उभयथाऽपि न कर्मातस्तदभावः ॐ ॥ 2-2-6-185 ॥

ॐ समवायाभ्युपगमाच्च साम्यादनवस्थितेः ॐ ॥ 2-2-6-186 ॥

ॐ नित्यमेव च भावात् ॐ ॥ 2-2-6-187 ॥

ॐ रूपादिमत्त्वाच्चविपर्ययो दर्शनात् ॐ ॥ 2-2-6-188 ॥

ॐ उभयथा च दोषात् ॐ ॥ 2-2-6-189 ॥

ॐ अपरिग्रहाच्चात्यन्तमनपेक्षा ॐ ॥ 2-2-6-190 ॥

समदायाधिकरणम् ॥ 2-2-7 ॥

ॐ समुदाय उभयहेतुकेऽपि तदप्राप्तिः ॐ ॥ 2-2-7-191 ॥

ॐ उत्तरोत्पादे च पूर्वनिरोधात् ॐ ॥ 2-2-7-193 ॥

ॐ असति प्रतिज्ञोपरोधो यौगपद्यमन्यथा ॐ ॥ 2-2-7-194 ॥

ॐ प्रतिसङ्ख्याऽप्रतिसङ्ख्यानिरोधप्राप्तिरविच्छेदात् ॐ ॥ 2-2-7-195 ॥

ॐ उभयथा च दोषात् ॐ ॥ 2-2-7-196 ॥

ॐ आकाशे चाविशेषात् ॐ ॥ 2-2-7-197 ॥

ॐ अनुस्मृतेश्च ॐ ॥ 2-2-7-198 ॥

असदधिकरणम् ॥ 2-2-8 ॥

ॐ नासतोऽदृष्टत्वात् ॐ ॥ 2-2-8-199 ॥

ॐ उदासीनानामपि चैवं सिद्धिः ॐ ॥ 2-2-8-200 ॥

ॐ नाभाव उपलब्धेः ॐ ॥ 2-2-8-201 ॥

ॐ वैधर्म्याच्च न स्वप्नादिवत् ॐ ॥ 29-202 ॥

अनुपलब्ध्यधिकरणम् ॥ 2-2-9 ॥

ॐ न भावोऽनुपलब्धेः ॐ ॥ 2-2-9-203 ॥

ॐ क्षणिकत्वाच्च ॐ ॥ 2-2-9-204 ॥

ॐ सर्वथाऽनुपपत्तेश्च ॐ ॥ 2-2-9-205 ॥

नैकस्मिन्नधिकरणम् ॥ 2-2-10 ॥

ॐ नैकस्मिन्नसम्भवात् ॐ ॥ 2-2-10-206 ॥

ॐ एवंचात्माकार्त्स्न्यम् ॐ ॥ 2-2-10-207 ॥

ॐ न च पर्यायादप्यविरोधो विकारादिभ्यः ॥ 2-2-10-208 ॥

ॐ अन्त्यावस्थितेश्चोभयनित्यत्वादविशेषात् ॐ ॥ 2-2-10-209 ॥

पत्युरधिकरणम् ॥ 2-2-11 ॥

ॐ पत्युरसामञ्जस्यात् ॐ ॥ 2-2-11-210 ॥

ॐ सम्बन्धानुपपत्तेश्च ॐ ॥ 2-2-11-211 ॥

ॐ अधिष्ठानानुपपत्तेश्च ॐ ॥ 2-2-11-212 ॥

ॐ करणवच्चेन्न भोगादिभ्यः ॐ ॥ 2-2-11-213 ॥

ॐ अन्तवत्त्वमसर्वज्ञता वा ॐ ॥ 2-2-11-214 ॥

उत्पत्त्यधिकरणम् ॥ 2-2-12 ॥

ॐ उत्पत्त्यसम्भवात् ॐ ॥ 2-2-12-215 ॥

ॐ न च कर्तुः करणम् ॐ ॥ 2-2-12-216 ॥

ॐ विज्ञानादिभावे वा तदप्रतिषेधः ॐ ॥ 2-2-12-217 ॥

ॐ विप्रतिषेधाच्च ॐ ॥ 2-2-12-218 ॥

तृतीयः पादः ॥2-3॥

वियदधिकरणम् ॥ 2-3-1 ॥

ॐ न वियदश्रुतेः ॥ 2-3-1-219 ॥

ॐ अस्तितु ॐ ॥ 2-3-1-220 ॥

ॐ गौण्यसम्भवात् ॐ ॥ 2-3-1-221 ॥

ॐ शब्दाच्च ॐ ॥ 2-3-1-222 ॥

ॐ स्याच्चैकस्य ब्रह्मशब्दवत् ॐ ॥ 2-3-1-223 ॥

ॐ प्रतिज्ञाहानिरव्यतिरेकाच्छब्देभ्यः ॐ ॥ 2-3-1-224 ॥

ॐ यावद्विकारं तु विभागो लोकवत् ॐ ॥ 2-3-1-225 ॥

मातरिश्वाधिकरणम् ॥ 2-3-2 ॥

ॐ एतेन मातरिश्वा व्याख्यातः ॐ ॥ 2-3-2-226 ॥

असम्भवाधिकरणम् ॥ 2-3-3 ॥

ॐ असम्भवस्तु सतोऽनुपपत्तेः ॐ ॥ 2-3-3-227 ॥

तेजोधिकरणम् ॥ 2-3-4 ॥

ॐ तेजोऽतस्तथा ह्याह ॐ ॥ 2-3-4-228 ॥

अबधिकरणम् ॥ 2-3-5 ॥

ॐ आपः ॐ ॥ 2-3-5-229 ॥

पृथिव्यधिकरणम् ॥ 2-3-6 ॥

ॐ पृथिव्यधिकाररूपशब्दान्तरादिभ्यः ॐ ॥ 2-3-6-230 ॥

तदभिध्यानाधिकरणम् ॥ 2-3-7 ॥

ॐ तदभिध्यानादेव तु तल्लिङ्गात् सः ॐ ॥ 2-3-7-231 ॥

विपर्ययाधिकरणम् ॥ 2-3-8 ॥

ॐ विपर्ययेण तु क्रमोऽत उपपद्यते च ॐ ॥ 2-3-8-232 ॥

अन्तराधिकरणम् ॥ 2-3-9 ॥

ॐ अन्तरा विज्ञानमनसी क्रमेण तल्लिङ्गादिति चेन्नाविशेषात् ॐ ॥ 2-3-9-233 ॥

ॐ चराचरव्यपाश्रयस्तु स्यात् तद्व्यपदेशो भाक्तस्तद्भावभावित्वात् ॐ ॥ 2-3-9-234 ॥

आत्माधिकरणम् ॥ 2-3-10 ॥

ॐ नात्माऽश्रुतेर्नित्यत्वाच्च ताभ्यः ॐ ॥ 2-3-10-235 ॥

ज्ञाधिकरणम् ॥ 2-3-11 ॥

ॐ ज्ञोऽत एव ॐ ॥ 2-3-11-236 ॥

ॐ युक्तेश्च ॐ ॥ 2-3-11-237 ॥

उत्क्रान्त्यधिकरणम् ॥ 2-3-12 ॥

ॐ उत्क्रान्तिगत्यागतीनाम् ॐ ॥ 2-3-12-238 ॥

ॐ स्वात्मना चोत्तरयोः ॐ ॥ 2-3-12-239 ॥

ॐ नाणुरतच्छ्रुतेरिति चेन्नेतराधिकारात् ॐ ॥ 2-3-12-240 ॥

ॐ स्वशब्दोन्मानाभ्यां च ॐ ॥ 2-3-12-241 ॥

ॐ अविरोधश्चन्दनवत् ॐ ॥ 2-3-12-242 ॥

ॐ अवस्थितिवैशेष्यादिति चेन्नाभ्युपगमाद्धृदि हि ॐ ॥ 2-3-12-243 ॥

ॐ गुणाद्वाऽऽलोकवत् ॐ ॥ 2-3-12-244 ॥

व्यतिरेकाधिकरणम् ॥ 2-3-13 ॥

ॐ व्यतिरेको गन्धवत् तथा च दर्शयति ॐ ॥ 2-3-13-245 ॥

पृथुगुपदेशाधिकरण् ॥ 2-3-14 ॥

ॐ पृथगुपदेशात् ॐ ॥ 2-3-14-246 ॥

ॐ तद्गुणसारत्वात् तु तद्व्यपदेशः प्राज्ञवत् ॐ ॥ 2-3-14-247 ॥

यावदधिकरणम् ॥ 2-3-15 ॥

ॐ यावदात्माभावित्वाच्च न दोषस्तद्दर्शनात् ॐ ॥ 2-3-15-248 ॥

पुंस्त्वाधिकरणम् ॥ 2-3-16 ॥

ॐ पुंस्त्वादिवत्त्वस्यसतोऽभिव्यक्तियोगात् ॐ ॥ 2-3-16-249 ॥

ॐ नित्योपलब्ध्यनुपलब्धिप्रसङ्गोऽन्यतरनियमो वाऽन्यथा ॐ ॥ 2-3-16-250 ॥

कर्तृत्वाधिकरणम् ॥ 2-3-17 ॥

ॐ कर्ता शास्त्रार्थवत्त्वात् ॐ ॥ 2-3-17-251 ॥

ॐ विहारोपदेशात् ॐ ॥ 2-3-17-252 ॥

ॐ उपादानात् ॐ ॥ 2-3-17-253 ॥

ॐ व्यपदेशाच्च क्रियायां न चेन्निर्देशविपर्ययः ॐ ॥ 2-3-17-254 ॥

ॐ उपलब्धिवदनियमः ॐ ॥ 2-3-17-255 ॥

ॐ शक्तिविपर्ययात् ॐ ॥ 2-3-17-256 ॥

ॐ समाध्यभावाच्च ॐ ॥ 2-3-17-257 ॥

ॐ यथा च तक्षोभयथा ॐ ॥ 2-3-17-258 ॥

ॐ परात् तु तच्छ्रुतेः ॐ ॥ 2-3-17-259 ॥

ॐ कृतप्रयत्नापेक्षस्तुविहितप्रतिषेधावैयर्थ्यादिभ्यः ॐ ॥ 2-3-17-260 ॥

अंशाधिकरणम् ॥ 2-3-18 ॥

ॐ अंशो नानाव्यपदेशादन्यथा चापि दाशकितवादित्वमधीयत एके ॐ
॥ 2-3-18-261 ॥

ॐ मन्त्रवर्णात् ॐ ॥ 2-3-18-262 ॥
ॐ अपि स्मर्यते ॐ ॥ 2-3-18-263 ॥
ॐ प्रकाशादिवन्नैवं परः ॐ ॥ 2-3-18-264 ॥
ॐ स्मरन्ति च ॐ ॥ 2-3-18-265 ॥
ॐ अनुज्ञापरिहारौ देहसम्बन्धाज्ज्योतिरादिवत् ॐ ॥ 2-3-18-266 ॥
ॐ असन्ततेश्चाव्यतिकरः ॐ ॥ 2-3-18-267 ॥
ॐ आभास एव च ॐ ॥ 2-3-18-268 ॥
अदृष्टाधिकरणम् ॥ 2-3-19 ॥
ॐ अदृष्टनियमात् ॐ ॥ 2-3-19-269 ॥
ॐ अभिसन्ध्यादिष्वपि चैवम् ॐ ॥ 2-3-19-270 ॥
ॐ प्रदेशादिति चेन्नान्तर्भावात् ॐ ॥ 2-3-19-271 ॥
चतुर्थः पादः ॥2-4॥
प्राणाधिकरणम् ॥ 2-4-1 ॥
ॐ तथा प्राणाः ॐ ॥ 2-4-1-272 ॥
ॐ गौण्यसम्भवात् ॐ ॥ 2-4-1-273 ॥
ॐ प्रतिज्ञानुपरोधाच्च ॐ ॥ 2-4-1-274 ॥
मनोधिकरणम् ॥ 2-4-2 ॥
ॐ तत् प्राक्श्रुतेश्च ॐ ॥ 2-4-2-275 ॥
तत्पूर्वकत्वाधिकरणम् ॥ 2-4-3 ॥
ॐ तत्पूर्वकत्वाद्वाचः ॐ ॥ 2-4-3-276 ॥
सप्तगत्यधिकरणम् ॥ 2-4-4 ॥
ॐ सप्तगतेर्विशेषितत्वाच्च ॐ ॥ 2-4-4-277 ॥
ॐ हस्तादयस्तुस्थितेऽतो नैवम् ॐ ॥ 2-4-4-278 ॥
अण्वधिकरणम् ॥ 2-4-5 ॥
ॐ अणवश्च ॐ ॥ 2-4-5-279 ॥

श्रेष्ठाधिकरणम्॥2-4-6॥
ॐ श्रेष्ठश्च ॐ ॥ 2-4-6-280 ॥
ॐ न वायुक्रिये पृथुगुपदेशात् ॐ ॥ 2-4-6-281 ॥
चक्षुराध्यधिकरणम्॥2-4-7॥
ॐ चक्षुरादिवत् तु तत्सहशिष्ट्यादिभ्यः ॐ ॥ 2-4-7-282 ॥
ॐ अकरणत्वाच्च न दोषस्तथा हि दर्शयति ॐ ॥ 2-4-7-283 ॥
पञ्चवृत्त्यधिकरणम्॥2-4-8॥
ॐ पञ्चवृत्तिर्मनोवद्व्यपदिश्यते ॐ ॥ 2-4-8-284 ॥
अण्वधिकरणम्॥2-4-9॥
ॐ अणुश्च ॐ ॥ 2-4-9-285 ॥
ज्योतिराद्यदिकरणम्॥2-4-10॥
ॐ ज्योतिराद्यधिष्ठानं तु तदामननात् ॐ ॥ 2-4-10-286 ॥
ॐ प्राणवता शब्दात् ॐ ॥ 2-4-10-287 ॥
ॐ तस्य च नित्यत्वात् ॐ ॥ 2-4-10-288 ॥
त इंद्रियाधिकरणम्॥2-4-11॥
ॐ त इन्द्रियाणि तद्व्यपदेशादन्यत्र श्रेष्ठात् ॐ ॥ 2-4-11-289 ॥
ॐ भेदश्रुतेः ॐ ॥ 2-4-11-290 ॥
ॐ वैलक्षण्याच्च ॐ ॥ 2-4-11-291 ॥
सङ्ज्ञाधिकरणम्॥2-4-12॥
ॐ सङ्ज्ञामूर्तिक्लृप्तिस्तु त्रिवृत्कुर्वत उपदेशात् ॐ॥2-4-12-292॥
मासाधिकरणम्॥2-4-13॥
ॐ मांसादि भौमं यथाशब्दमितरयोश्च ॐ ॥ 2-4-13-293 ॥
ॐ वैशेष्यात् तु तद्वादस्तद्वादः ॐ ॥ 2-4-13-294 ॥

तृतीयाध्यायः ॥3॥

प्रथमः पादः ॥3-1॥

तदन्तराधिकरणम् ॥3-1-1॥

ॐ तदन्तरप्रतिपत्तौरंहति सम्परिष्वक्तः प्रश्ननिरूपणाभ्याम् ॐ ॥ 3-1-1-295 ॥

त्यात्मकत्वाधिकरणम् ॥3-1-2॥

ॐ त्र्यात्मकत्वात् तु भूयस्त्वात् ॐ ॥ 3-1-2-296 ॥

प्राणगत्यधिकरणम् ॥3-1-3॥

ॐ प्राणगतेश्च ॐ ॥ 3-1-3-297 ॥

अग्न्याद्यधिकरणम् ॥3-1-4॥

ॐ अग्न्यादिगतिश्रुतेरिति चेन्न भाक्तत्वात् ॐ ॥ 3-1-4-298 ॥

प्रथमाधिकरणम् ॥3-1-5॥

ॐ प्रथमेऽश्रवणादिति चेन्न ता एव ह्युपपत्तेः ॐ ॥ 3-1-5-299 ॥

अश्रुतत्वाधिकरणम् ॥3-1-6॥

ॐ अश्रुतत्वादिति चेन्नेष्टादिकारिणं प्रतीतेः ॐ ॥ 3-1-6-300 ॥

भाक्ताधिकरणम् ॥3-1-7॥

ॐ भाक्तं वाऽनात्मवित्त्वात् तथा हि दर्शयति ॐ ॥ 3-1-7-301 ॥

कृतात्ययाधिकरणम् ॥3-1-8॥

ॐ कृतात्ययेऽनुशयवान् दृष्टस्मृतिभ्याम् ॐ ॥ 3-1-8-302 ॥

यथेताधिकरणम् ॥3-1-9॥

ॐ यथेतमनेवं च ॐ ॥ 3-1-9-303 ॥

चरणाधिकरणम् ॥3-1-10॥

ॐ चरणादिति चेन्न तदुपलक्षणार्थेति कार्ष्णाजिनिः ॐ ॥ 3-1-10-304 ॥

ॐ आनर्थक्यमिति चेन्न तदपेक्षत्वात् ॐ ॥ 3-1-10-305 ॥

ॐ सुकृतदुष्कृते एवेति तु बादरिः ॐ ॥ 3-1-10-306 ॥

अनिष्टाधिकरणम् ॥ 3-1-11 ॥
ॐ अनिष्टादिकारिणामपि च श्रुतम् ॐ ॥ 3-1-11-307 ॥
ॐ संयमने त्वनुभूयेतरेषामारोहावरोहौ तद्गतिदर्शनात् ॐ ॥ 3-1-11-308 ॥
ॐ स्मरन्ति च ॐ ॥ 3-1-11-309 ॥
अपिसप्ताधिकरणम् ॥ 3-1-12 ॥
ॐ अपि सप्त ॐ ॥ 3-1-12-310 ॥
तत्राप्यधिकरणम् ॥ 3-1-13 ॥
ॐ तत्रापि च तद्व्यापारादविरोधः ॐ ॥ 3-1-13-311 ॥
विद्याधिकरणम् ॥ 3-1-14 ॥
ॐ विद्याकर्मणोरिति तु प्रकृतत्वात् ॐ ॥ 3-1-14-312 ॥
तृतीयाधिकरणम् ॥ 3-1-15 ॥
ॐ न तृतीये तथोपलब्धेः ॐ ॥ 3-1-15-313 ॥
ॐ स्मर्यतेऽपि च लोके ॐ ॥ 3-1-15-314 ॥
ॐ दर्शनाच्च ॐ ॥ 3-1-15-315 ॥
ॐ तृतीये शब्दावरोधः संशोकजस्य ॐ ॥ 3-1-15-316 ॥
ॐ स्मरणाच्च ॐ ॥ 3-1-15-317 ॥
तत् स्वाभाव्याधिकरणम् ॥ 3-1-16 ॥
ॐ तत्स्वाभाव्यापत्तिरुपपत्तेः ॐ ॥ 3-1-16-318 ॥
नातिचिरेणाधिकरणम् ॥ 3-1-17 ॥
ॐ नातिचिरेण विशेषात् ॐ ॥ 3-1-17-319 ॥
अन्याधिकरणम् ॥ 3-1-18 ॥
ॐ अन्याधिष्ठिते पूर्ववदभिलापात् ॐ ॥ 3-1-18-320 ॥
ॐ अशुद्धमिति चेन्न शब्दात् ॐ ॥ 3-1-18-321 ॥
रेतोधिकरणम् ॥ 3-1-19 ॥
ॐ रेतःसिग्योगोऽथ ॐ ॥ 3-1-19-322 ॥

योन्यधिकरणम् ॥ 3-1-20 ॥

ॐ योनेः शरीरम् ॐ ॥ 3-1-20-323 ॥

द्वितीयः पादः ॥ 3-2 ॥

सन्ध्यादिकरणम् ॥ 3-2-1 ॥

ॐ सन्ध्ये सृष्टिराह हि ॐ ॥ 3-2-1-324 ॥ ॐ

ॐ निर्मातारं चैके पुत्रादयश्च ॐ ॥ 3-2-1-325 ॥

ॐ मायामात्रं तु कात्स्न्येनानभिव्यक्त स्वरूपत्वात् ॐ ॥ 3-2-1-326 ॥

ॐ सूचकश्च हि श्रुतेराचक्षते च तद्विदः ॐ ॥ 3-2-1-327 ॥

पराभिध्यानाधिकरणम् ॥ 3-2-2 ॥

ॐ पराभिध्यानात् तु तिरोहितं ततो ह्यस्य बन्धविपर्ययौ ॐ ॥ 3-2-2-328 ॥

दोहयोगाधिकरणम् ॥ 3-2-3 ॥

ॐ देहयोगाद्वासोऽपि ॐ ॥ 3-2-3-329 ॥

तद्भावाधिकरणम् ॥ 3-2-4 ॥

ॐ तद्भावो नाडीषु तच्छ्रुतेरात्मनि ह ॐ ॥ 3-2-4-330 ॥

प्रबोधाधिकरणम् ॥ 3-2-5 ॥

ॐ अतः प्रभोधोऽस्मात् ॐ ॥ 3-2-5-331 ॥

कर्मानुस्मृत्यधिकरणम् ॥ 3-2-6 ॥

ॐ स एव च कर्मानुस्मृतिशाब्द्विधिभ्यः ॐ ॥ 3-2-6-332 ॥

सम्पत्यधिकरणम् ॥ 3-2-7 ॥

ॐ मुग्धेऽर्धसम्पत्तिः परिशेषात् ॐ ॥ 3-2-7-333 ॥

न स्थानतोऽप्यधिकरणम् ॥ 3-2-8 ॥

ॐ न स्थानतोऽपि परस्योभयलिङ्गं सर्वत्र हि ॐ ॥ 3-2-8-334 ॥

ॐ न भेदादिति चेन्न प्रत्येकमतद्वचनात् ॐ ॥ 3-2-8-335 ॥

ॐ अपि चैवमेके ॐ ॥ 3-2-8-336 ॥

अरूपाधिकरणम् ॥ 3-2-9 ॥

ॐ अरूपवदेव हि तत्प्रधानत्वात् ॐ ॥ 3-2-9-337 ॥

ॐ प्रकाशवच्चावैयर्थ्यम् ॐ ॥ 3-2-9-338 ॥

ॐ आह च तन्मात्रम् ॐ ॥ 3-2-9-339 ॥

ॐ दर्शयति चाथो अपि स्मर्यते ॐ ॥ 3-2-9-340 ॥

उपमाधिकरणम् ॥ 3-2-10 ॥

ॐ अत एव चोपमा सूर्यकादिवत् ॐ ॥ 3-2-10-341 ॥

अम्बुवदधिकरणम् ॥ 3-2-11 ॥

ॐ अम्बुवदग्रहणात् तु न तथात्वम् ॐ ॥ 3-2-11-342 ॥

वृद्धिह्रासाधिकरणम् ॥ 3-2-12 ॥

ॐ वृद्धिह्रासभाक्त्वमन्तर्भावादुभयसामञ्जस्यादेवम् ॐ ॥3-2-12-343॥

ॐ दर्शनाच्च ॐ ॥ 3-2-12-344 ॥

पालकत्वाधिकरणम् ॥ 3-2-13 ॥

ॐ प्रकृतैतावत्त्वं हि प्रतिषेधति ततो ब्रवीति च भूयः ॐ॥ 3-2-13-345 ॥

अव्यक्तश्चाधिकरणम् ॥ 3-2-14 ॥

ॐ तदव्यक्तमाह हि ॐ ॥3-2-14-346 ॥

ॐ अपि संराधने प्रत्यक्षानुमानाभ्याम् ॐ ॥3-2-14-347 ॥

ॐ प्रकाशवच्चावैशेष्यम् ॐ ॥3-2-14-348 ॥

ॐ प्रकाशश्च कर्मण्यभ्यासात् ॐ ॥3-2-14-349 ॥

ॐ अतोऽनन्तेन तथा हि लिङ्गम् ॐ ॥3-2-14-350 ॥

अहिकुण्डलाधिकरणम् ॥ 3-2-15 ॥

ॐ उभयव्यपदेशात् त्वहिकुण्डलवत् ॐ ॥ 3-2-15-351 ॥

ॐ प्रकाशाश्रयवद्वा तेजस्त्वात् ॐ ॥ 3-2-15-352 ॥

ॐ पूर्ववद्वा ॐ ॥ 3-2-15-353 ॥

ॐ प्रतिषेधाच्च ॐ ॥ 3-2-15-354 ॥

परमताधिकरणम्॥3-2-16॥

ॐ परमतः सेतून्मानसम्बन्धभेदव्यपदेशेभ्यः ॐ ॥ 3-2-16-355॥

ॐ दर्शनात् तु ॐ ॥ 3-2-16-356 ॥

ॐ बुद्ध्यर्थः पादवत् ॐ ॥ 3-2-16-357 ॥

स्थानविशेषाधिकरणम्॥3-2-17॥

ॐ स्थानविशेषात् प्रकाशादिवत् ॐ ॥ 3-2-17-358 ॥

ॐ उपपत्तेश्च ॐ ॥ 3-2-17-359 ॥

तथान्यत्वाधिकरणम्॥3-2-18॥

ॐ तथाऽन्यत् प्रतिषेधात् ॐ ॥ 3-2-18-360 ॥

सर्वगतत्वाधिकरणम्॥3-2-19॥

ॐ अनेन सर्वगतत्वमायामयशब्दादिभ्यः ॐ ॥ 3-2-19-361 ॥

फलाधिकरणम्॥3-2-20॥

ॐ फलमत उपपत्तेः ॐ ॥ 3-2-20-362 ॥

ॐ श्रुतत्वाच्च ॐ ॥ 3-2-20-363 ॥

ॐ धर्मं जैमिनिरत एव ॐ ॥ 3-2-20-364 ॥

ॐ पूर्वं तु बादरायणो हेतु व्यपदेशात् ॐ ॥3-2-20-365 ॥

तृतीयः पादः ॥3-3॥

सर्ववेदान्ताधिकरणम्॥3-3-1॥

ॐ सर्ववेदान्तप्रत्ययं चोदनाद्यविशेषात् ॐ ॥ 3-3-1-366 ॥

ॐ भेदान्नेति चेदेकस्यामपि ॐ ॥ 3-3-1-367 ॥

ॐ स्वाध्यायस्य तथात्वेन हि समाचारेऽधिकाराच्च ॐ ॥ 3-3-1-368 ॥

ॐ सलिलवच्च तन्नियमः ॐ ॥ 3-3-1-369 ॥

ॐ दर्शयति च ॐ ॥ 3-3-1-370 ॥

उपसंहाराधिकरणम्॥3-3-2॥

ॐ उपसंहारोऽर्थाभेदाद्विधिशेषवत् समाने च ॐ॥3-3-2-371॥

ॐ अन्यथात्वं शब्दादिति चेन्नाविशेषात् ॐ ॥3-3-2-372॥

ॐ न वा प्रकरणभेदात् परोवरीयस्त्वादिवत् ॐ ॥3-3-2-373॥

ॐ सङ्ज्ञातश्चेत् तदुक्तमस्ति तु तदपि ॐ ॥3-3-2-374॥

प्राप्त्यधिरकणम्॥3-3-3॥

ॐ प्राप्तेश्च समञ्जसम् ॐ ॥ 3-3-3-375 ॥

सर्वभेदाधिकरणम्॥3-3-4॥

ॐ सर्वाभेदादन्यत्रेमे ॐ ॥ 3-3-4-376 ॥

आनन्दाधिकरणम्॥3-3-5॥

ॐ आनन्दादयः प्रधानस्य ॐ ॥ 3-3-5-377 ॥

प्रियशिरस्त्वाधिकरणम्॥3-3-6॥

ॐ प्रियशिरस्त्वाद्यप्राप्तिरुपचयापचयौ हि भेदे ॐ ॥3-3-6-378 ॥

इतराधिकरणम्॥3-3-7॥

ॐ इतरे त्वर्थसामान्यात् ॐ ॥ 3-3-7-379 ॥

अध्यानाधिकरणम्॥3-3-8॥

ॐ आध्यानाय प्रयोजनाभावात् ॐ ॥ 3-3-8-380 ॥

ॐ आत्मशब्दाच्च ॐ ॥ 3-3-8-381 ॥

आत्मगहीत्यधिकरणम्॥3-3-9॥

ॐ आत्मगृहीतिरितवदुत्तरात् ॐ ॥ 3-3-9-382 ॥

अन्वयाधिकरणम्॥3-3-10॥

ॐ अन्वयादिति चेत् स्यादवधारणात् ॐ ॥ 3-3-10-383 ॥

कार्याधिकरणम्॥3-3-11॥

ॐ कार्याख्यानादपूर्वम् ॐ ॥ 3-3-11-384 ॥

समानाधिकरणम्॥3-3-12॥

ॐ समान एवं चाभेदात् ॐ ॥ 3-3-12-385 ॥

ॐ सम्बन्धादेवमन्यत्रापि ॐ ॥ 3-3-12-386 ॥

नवाधिकरणम्॥3-3-13॥

ॐ न वा विशेषात् ॐ ॥ 3-3-13-387 ॥

ॐ दर्शयति च ॐ ॥ 3-3-13-388 ॥

शम्भृत्यधिकरणम् ॥ 3-3-14 ॥

ॐ सम्भृतिद्युव्याप्त्यपि चातः ॐ ॥ 3-3-14-389 ॥

पुरुषाधिकरणम् ॥ 3-3-15 ॥

ॐ पुरुषविद्यायामपि चेतरेषामनाम्नानात् ॐ ॥ 3-3-15-390 ॥

वेदाधिकरणम् ॥ 3-3-16 ॥

ॐ वेधाद्यर्थभेदात् ॐ ॥ 3-3-16-391 ॥

हान्याधिकरणम् ॥ 3-3-17 ॥

ॐ हानौ तूपायनशब्दशेषत्वात् कुशाछंदस्तुत्युपगानवत् तदुक्तम् ॐ ॥ 3-3-17-392 ॥

ॐ साम्परायेतर्तव्याभावात् तथा ह्यन्ये ॐ ॥ 3-3-17-393 ॥

छन्दाधिकरणम् ॥ 3-3-18 ॥

ॐ छन्दत उभयाविरोधात् ॐ ॥ 3-3-18-394 ॥

ॐ गतेरर्थवत्त्वमुभयथाऽन्यथा ह विरोधः ॐ ॥ 3-3-18-395 ॥

ॐ उपपन्नस्तल्लक्षणार्थोपलब्धेर्लोकवत् ॐ ॥ 3-3-18-396 ॥

अनियमाधिकरणम् ॥ 3-3-19 ॥

ॐ अनियमः सर्वेषामविरोधाच्छब्दानुमानाभ्याम् ॐ ॥ 3-3-19-397 ॥

यावदधिकरणम् ॥ 3-3-20 ॥

ॐ यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणाम् ॐ ॥ 3-3-20-398 ॥

ॐ अक्षरधियां त्वविरोधः सामान्यतद्भावाभ्यामौपसदवत् तदुक्तम् ॐ ॥ 3-3-20-399 ॥

इयदामननाधिकरणम् ॥ 3-3-21 ॥

ॐ इयदामननात् ॐ ॥ 3-3-21-400 ॥

ॐ अन्तरा भूतग्रामवदिति चेत् तदुक्तम् ॐ ॥ 3-3-21-401 ॥

ॐ अन्यथा भेदानुपपत्तिरिति चेन्नोपदेशवत् ॐ ॥ 3-3-21-402 ॥

व्यतिहाराधिकरणम्॥ 3-3-22 ॥
ॐ व्यतिहारो विशिंषन्ति हीतरवत् ॐ ॥ 3-3-22-403 ॥
सत्याधिकरणम्॥ 3-3-23 ॥
ॐ सैव हि सत्यादयः ॐ ॥ 3-3-23-404 ॥
कामाधिकरणम्॥ 3-3-24 ॥
ॐ कामादितरत्र तत्र चायतनादिभ्यः ॐ ॥ 3-3-24-405 ॥
ॐ आदरादलोपः ॐ ॥ 3-3-24-406 ॥
ॐ उपस्थितेऽस्तद्वचनात् ॐ ॥ 3-3-24-407 ॥
निर्धारणाधिकरणम्॥ 3-3-25 ॥
ॐ तन्निर्धारणार्थनियमस्तद्दृष्टेः पृथग्घ्यप्रतिबन्धः पलम् ॐ ॥3-3-25-408 ॥
प्रदानाधिकरणम्॥ 3-3-26 ॥
ॐ प्रदानवदेव हि तदुक्तम् ॐ ॥ 3-3-26-409 ॥
लिङ्गभूयस्त्वाधिकरणम्॥ 3-3-27 ॥
ॐ लिङ्गभूयस्त्वात् तद्धि बलीयस्तदपि ॐ ॥ 3-3-27-410 ॥
पूर्वविकल्पाधिकरणम्॥ 3-3-28 ॥
ॐ पूर्वविकल्पःप्रकरणात् स्यात् क्रियामानसवत् ॐ ॥3-3-28-411 ॥
ॐ अतिदेशाच्च ॐ ॥ 3-3-28-412 ॥
विध्याधिकरणम्॥ 3-3-29 ॥
ॐ विद्यैव तु निर्धारणात् ॐ ॥ 3-3-29-413 ॥
ॐ दर्शनाच्च ॐ ॥ 3-3-29-414 ॥
श्रुत्यधिकरणम्॥ 3-3-30 ॥
ॐ श्रुत्यादिबलीयास्त्वाच्च न बाधः ॐ ॥ 3-3-30-415 ॥
अनुबन्धाधिकरणम्॥ 3-3-31 ॥
ॐ अनुबन्धादिभ्यः ॐ ॥ 3-3-31-416 ॥
प्रभ्याधिकरणम्॥ 3-3-32 ॥
ॐ प्रज्ञान्तरपृथक्त्ववद्दृष्टिश्च तदुक्तम् ॐ ॥ 3-3-32-417 ॥

न सामान्याधिकरणम् ॥ 3-3-33 ॥

ॐ न सामान्यादप्युपलब्धेर्मृत्युवन्न हि लोकापत्तिः ॐ ॥ 3-3-33-418 ॥

परेणाधिकरणम् ॥ 3-3-34 ॥

ॐ परेण शब्दस्य ताद्विध्यं भूयस्त्वात् त्वनुबन्धः ॐ ॥ 3-3-34-419 ॥

एकाधिकरणम् ॥ 3-3-35 ॥

ॐ एकः आत्मनः शरीरे भावात् ॐ ॥ 3-3-35-420 ॥

ॐ व्यतिरेकस्तद्भावभावित्वान्न तूपलब्धिवत् ॐ ॥ 3-3-35-421 ॥

अङ्गावबद्धाधिकरणम् ॥ 3-3-36 ॥

ॐ अङ्गावबद्धास्तुन शाखासु हि प्रतिवेदनम् ॐ ॥ 3-3-36-422 ॥

ॐ मन्त्रादिवद्वाऽविरोधः ॐ ॥ 3-3-36-423 ॥

भूमाधिकरणम् ॥ 3-3-37 ॥

ॐ भूम्नःक्रतुवज्ज्यायस्त्वं तथा च दर्शयति ॐ ॥ 3-3-37-424 ॥

नानाशब्दाधिकरणम् ॥ 3-3-38 ॥

ॐ नाना शब्दादिभेदात् ॐ ॥ 3-3-38-425 ॥

विकल्पाधिकरणम् ॥ 3-3-39 ॥

ॐ विकल्पो विशिष्टफलत्वात् ॐ ॥ 3-3-39-426 ॥

काम्याधिकरणम् ॥ 3-3-40 ॥

ॐ काम्यास्तुयथाकामं समुच्चीयेरन्न वा पूर्वहेत्वभावात् ॐ ऑ
॥ 3-3-40-427 ॥

अङ्गाधिकरणम् ॥ 3-3-41 ॥

ॐ अङ्गेषु यथाऽऽश्रयाभावः ॐ ॥ 3-3-41-428 ॥

ॐ शिष्टेश्च ॐ ॥ 3-3-41-429 ॥

ॐ समाहारात् ॐ ॥ 3-3-41-430 ॥

ॐ गुणसाधारण्यश्रुतेश्च ॐ ॥ 3-3-41-431 ॥

नवाधिकरणम् ॥ 3-3-42 ॥

ॐ न वाऽतत्सहभावश्रुतेः ॐ ॥ 3-3-42-432 ॥

चतुर्थः पादः ॥3-4॥

पुरुषार्थाधिकरणम्॥3-4-1॥

ॐ दर्शनाच्च ॐ ॥ 3-4-1-433 ॥

ॐ पुरुषार्थोऽतः शब्दादिति बादरायणः ॐ ॥ 3-4-1-434 ॥

ॐ शेषत्वात् पुरुषार्थवादो यथाऽन्येष्विति जैमिनिः ॐ ॥ 3-4-1-435 ॥

ॐ आचारदर्शनात् ॐ ॥ 3-4-1-436 ॥

ॐ तच्छ्रुतेः ॐ ॥ 3-4-1-437 ॥

ॐ समन्वारम्भणात् ॐ ॥ 3-4-1-438 ॥

ॐ तद्वतो विधानात् ॐ ॥ 3-4-1-439 ॥

ॐ नियमाच्च ॐ ॥ 3-4-1-440 ॥

ॐ अधिकोपदेशात् तु बादरायणस्यैवं तद्दर्शनात् ॐ ॥ 3-4-1-441॥

ॐ तुल्यम् तु दर्शनम् ॐ ॥ 3-4-1-442 ॥

असार्वत्रिकधिकरणम्॥3-4-2॥

ॐ असार्वत्रिकी ॐ ॥ 3-4-2-443 ॥

ॐ विभागः शतवत् ॐ ॥ 3-4-2-444 ॥

ॐ अध्ययनमात्रवतः ॐ ॥ 3-4-2-445 ॥

अविशेषाधिकरणम्॥3-4-3॥

ॐ नाविशेषात् ॐ ॥ 3-4-3-446 ॥

स्तित्यधिकरणम्॥3-4-4॥

ॐ स्तुतयेऽनुमतिर्वा ॐ ॥ 3-4-4-447 ॥

ॐ कामकारेण चैके ॐ ॥ 3-4-4-448 ॥

ॐ उपमर्दं च ॐ ॥ 3-4-4-449 ॥

ॐ ऊर्ध्वरेतस्सु च शब्दे हि ॐ ॥ 3-4-4-450 ॥

ॐ परामर्शं जैमिनिरचोदना चापवदति हि ॐ ॥ 3-4-4-451 ॥

ॐ अनुष्ठेयं बादरायणः साम्यश्रुतेः ॐ ॥ 3-4-4-452 ॥

ॐ विधिर्वा धारणवत् ॐ ॥ 3-4-4-453 ॥

ॐ स्तुतिमात्रमुपादानादिति चेन्नापूर्वत्वात् ॐ ॥ 3-4-4-454 ॥

ॐ भावशब्दाच्च ॐ ॥ 3-4-4-455 ॥

ॐ पारिप्लवार्था इति चेन्न विशेषितत्वात् ॐ ॥ 3-4-4-456 ॥

ॐ तथा चैकवाक्योपबन्धात् ॐ ॥ 3-4-4-457 ॥

ॐ अत एव चाग्नीन्धनाद्यनपेक्षा ॐ ॥ 3-4-4-458 ॥

ॐ सर्वापेक्षा च यज्ञादिश्रुतेरश्ववत् ॐ ॥ 3-4-4-459 ॥

ॐ शमदमाद्युपेतः स्यात् तथाऽपितु तद्विधेस्तदङ्गतया तेषामवश्यानुष्ठेयत्वात् ॐ ॥ 3-4-4-460 ॥

ॐ सर्वान्नानुमतिश्च प्राणात्यये तद्दर्शनात् ॐ ॥ 3-4-4-461 ॥

ॐ अबाधाच्च ॐ ॥ 3-4-4-462 ॥

ॐ अपि स्मर्यते ॐ ॥ 3-4-4-463 ॥

ॐ शब्दश्चातोऽकामचारे ॐ॥ 3-4-4-464 ॥

ॐ विहितत्वाच्चाश्रमकर्मापि ॐ ॥ 3-4-4-465 ॥

ॐ सहकारित्वेन च ॐ ॥ 3-4-4-466 ॥

उभयलिङ्गाधिकरणम् ॥ 3-4-5 ॥

ॐ सर्वथाऽपितु त एवोभयलिङ्गात् ॐ ॥ 3-4-5-467 ॥

ॐ अनभिभवं च दर्शयति ॐ ॥ 3-4-5-468 ॥

ॐ अन्तरा चापि तु तद्दृष्टेः ॐ ॥ 3-4-5-469 ॥

ॐ अपि स्मर्यते ॐ ॥ 3-4-5-470 ॥

ॐ विशेषानुग्रहं च ॐ ॥ 3-4-5-471 ॥

ॐ अतस्त्वितरज्ज्यायोलिङ्गाच्च ॐ ॥ 3-4-5-472 ॥

ॐ तद्भूतस्य तु तद्भावो जैमिनेरपि नियमातद्रूपाभावेभ्यः ॐ ॥ 3-4-5-473 ॥

अधिकारिकाधिकरणम् ॥ 3-4-6 ॥

ॐ न चाधिकारिकमपि पतनानुमानात् तदयोगात् ॐ ॥ 3-4-6-4 ॥

ॐ उपपूर्वमपीत्येके भावशमनवत् तदुक्तम् ॐ ॥ 3-4-6-475 ॥

ॐ बहिस्तूभयथाऽपि स्मृतेराचाराच्च ॐ ॥ 3-4-6-476 ॥

फलश्रुत्यधिकरणम्॥3-4-7॥

ॐ स्वामिनः फलश्रुतेरित्यात्रेयः ॐ ॥ 3-4-7-477 ॥

ॐ आर्त्विज्यमित्यौडुलोमिस्तस्मै हि परिक्रियते ॐ ॥ 3-4-7-478 ॥

ॐ सहकार्यन्तरविधिःपक्षेण तृतीयं तद्वतो विध्यादिवत् ॐ ॥ 3-4-7-479 ॥

कृत्स्नभावाधिकरणम्॥3-4-8॥

ॐ कृत्स्नभावात् तु गृहिणोपसंहारः ॐ ॥ 3-4-8-480 ॥

ॐ मौनवदितरेषामप्युपदेशात् ॐ ॥ 3-4-8-481 ॥

अन्वयाधिकरणम्॥3-4-9॥

ॐ अनाविष्कुर्वन्नन्वयात् ॐ ॥ 3-4-9-482 ॥

ऐहिकाधिकरणम्॥3-4-10॥

ॐ ऐहिकमप्रस्तुतप्रतिबन्धे तद्दर्शनात् ॐ ॥ 3-4-10-483 ॥

मुक्तिफलाधिकरणम्॥3-4-11॥

ॐ एवं मुक्तिफलानियमस्तदवस्थावधृतेस्तदवस्थावधृतेः ॐ ॥ 3-4-11-484 ॥

चतुर्थाध्याय॥4॥

प्रथमः पादः ॥4-1-॥

अवृत्त्यधिकरणम्॥4-1-1॥

ॐ आवृत्तिरसकृदुपदेशात् ॐ ॥ 4-1-1-485 ॥

ॐ लिङ्गाच्च ॐ ॥ 4-1-1-486 ॥

आत्माधिकरणम्॥4-1-2॥

ॐ आत्मेति तूपगच्छन्ति ग्राहयन्ति च ॐ ॥ 4-1-2-487 ॥

न प्रतीकाधिकरणम्॥4-1-3॥

ॐ न प्रतीके न हि सः ॐ ॥ 4-1-3-488 ॥

ब्रह्माधिकरणम्॥4-1-4॥

ॐ ब्रह्मदृष्टिरुत्कर्षात् ॐ ॥ 4-1-4-489 ॥

आदित्याधिकरणम् ॥ 4-1-5 ॥

ॐ आदित्यादिमतयश्चाङ्ग उपपत्तेः ॐ ॥ 4-1-5-490 ॥

आसीनाधिकरणम् ॥ 4-1-6 ॥

ॐ आसीनः सम्भवात् ॐ ॥ 4-1-6-491 ॥

ॐ ध्यानाच्च ॐ ॥ 4-1-6-492 ॥

ॐ अचलत्वं चापेक्ष्य ॐ ॥ 4-1-6-493 ॥

ॐ स्मरन्ति च ॐ ॥ 4-1-6-494 ॥

ॐ यत्रैकाग्रता तत्रा विशेषात् ॐ ॥ 4-1-6-495 ॥

अप्रायणाधिकरणम् ॥ 4-1-7 ॥

ॐ आ प्रायणात् तत्रापि हि दृष्टम् ॐ ॥ 4-1-7-496 ॥

तदधिगमाधिकरणम् ॥ 4-1-8 ॥

ॐ तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौ तद्व्यपदेशात् ॐ ॥ 4-1-8-497 ॥

ॐ इतरस्याप्येवमसंश्लेषः पाते तु ॐ ॥ 4-1-8-498 ॥

ॐ अनारब्धकार्ये एव तु पूर्वे तदवधेः ॐ ॥ 4-1-8-499 ॥

ॐ अग्निहोत्रादि तु तत्कार्यायैव तद्दर्शनात् ॐ ॥ 4-1-8-500 ॥

ॐ अतोऽन्यदपीत्येकेषामुभयोः ॐ ॥ 4-1-8-501 ॥

ॐ यदेव विद्ययेति हि ॐ ॥ 4-1-8-502 ॥

ॐ भोगेन त्वितरे क्षपयित्वाऽथ सम्पत्स्यते ॐ ॥ 4-1-8-503 ॥

द्वितीयः पादः ॥ 4-2 ॥

वाङ्मनसाधिकरणम् ॥ 4-2-1 ॥

ॐ वाङ्मनसि दर्शनाच्छब्दाच्च ॐ ॥ 4-2-1-504 ॥

ॐ अत एव च सर्वाण्यनु ॐ ॥ 4-2-1-505 ॥

मनःप्राणाधिकरणम् ॥ 4-2-2 ॥

ॐ तन्मनः प्राण उत्तरात् ॐ ॥ 4-2-2-506 ॥

अध्यक्षाधिकरणम् ॥ 4-2-3 ॥

ॐ सोऽध्यक्षे तदुपगमादिभ्यः ॐ ॥ 4-2-3-507 ॥

भूताधिकरणम्॥ 4-2-4॥

ॐ भूतेषु तच्छ्रुतेः ॐ ॥ 4-2-4-508 ॥

नैकस्मिन्नधिकरणम्॥ 4-2-5॥

ॐ नैकस्मिन् दर्शयतो हि ॐ ॥ 4-2-5-509 ॥

समानाधिकरणम्॥ 4-2-6॥

ॐ समना चासृत्युपक्रमादमृतत्वं चानुपोष्य ॐ॥4-2-6-510॥

ॐ तदपीतेः संसारव्यपदेशात् ॐ ॥ 4-2-6-511 ॥

ॐ सूक्ष्मं प्रमाणतश्च तथोपलब्धेः ॐ ॥ 4-2-6-512 ॥

ॐ नोपमर्देनातः ॐ ॥ 4-2-6-513 ॥

ॐ अस्यैव चोपपत्तेरूष्मा ॐ ॥ 4-2-6-514 ॥

ॐ प्रतिषेधादिति चेन्न शारीरात् ॐ ॥ 4-2-6-515 ॥

ॐ स्पष्टो ह्येकेषाम् ॐ ॥ 4-2-6-516 ॥

ॐ स्मर्यते च ॐ ॥ 4-2-6-517 ॥

पराधिकरणम्॥ 4-2-7॥

ॐ तानि परे तथा ह्याह ॐ ॥ 4-2-7-518 ॥

अविभागाधिकरणम्॥ 4-2-8॥

ॐ अविभागो वचनात् ॐ ॥ 4-2-8-519 ॥

तदोकोज्वलनाधिकरणम्॥ 4-2-9॥

ॐ तदोकोऽग्रज्वलनं तत्प्रकाशितद्वारो विद्यासामर्थ्यात् तच्छेषगत्यनुस्मृतियोगाच्च हार्दानुगृहीतः शताधिकया ॐ ॥ 4-2-9-520 ॥

ॐ रश्म्यनुसारी ॐ ॥ 4-2-9-521 ॥

ॐ निशि नेति चेन्न सम्बन्धात् ॐ ॥ 4-2-9-522 ॥

ॐ यावद्देहभावित्वाद्दर्शयति च ॐ ॥ 4-2-9-523 ॥

ॐ अतश्चायनेऽपि हि दक्षिणे ॐ ॥ 4-2-9-524 ॥

योग्यधिकरणम्॥ 4-2-10॥

ॐ योगिनः प्रति स्मर्येते स्मार्ते चैते ॐ ॥ 4-2-10-525 ॥

तृतीयः पादः ॥4-3॥

अर्चिराद्यधिकरणम्॥4-3-1॥

ॐ अर्चिरादिना तत्प्रथितेः ॐ ॥ 4-3-1-526 ॥

वायुशब्दाधिकरणम्॥4-3-2॥

ॐ वायुशब्दादविशेषविशेषाभ्याम् ॐ ॥ 4-3-2-527 ॥

तटिदधिकरणम्॥4-3-3॥

ॐ तटितोऽधिवरुणः सम्बन्धात् ॐ ॥ 4-3-3-528 ॥

अतिवाहिताधिकरणम्॥4-3-4॥

ॐ आतिवाहिकस्तल्लिङ्गात् ॐ ॥ 4-3-4-529 ॥

ॐ उभयव्यामोहत् तत्सिद्धेः ॐ॥ 4-3-4-530 ॥

वैद्युताधिकरणम्॥4-3-5॥

ॐ वैद्युतेनैव ततस्तच्छ्रुतेः ॐ ॥ 4-3-5-531 ॥

कार्याधिकरणम्॥4-3-6॥

ॐ कार्यं बादरिरस्यगत्युपपत्तेः ॐ ॥ 4-3-6-532 ॥

ॐ विशेषितत्वाच्च ॐ ॥ 4-3-6-533 ॥

ॐ सामीप्यात्तुतद्व्यपदेशः ॐ ॥ 4-3-6-534 ॥

ॐ कार्यात्यये तदध्यक्षेण सहातः परमभिधानात् ॐ॥4-3-6-535 ॥

ॐ स्मृतेश्च ॐ ॥ 4-3-6-536 ॥

ॐ परं जैमिनिर्मुख्यत्वात् ॐ ॥ 4-3-6-537 ॥

ॐ दर्शनाच्च ॐ ॥ 4-3-6-538 ॥

ॐ न च कार्ये प्रतिपत्त्यभिसन्धिः ॐ ॥ 4-3-6-539 ॥

ॐ अप्रतीकालम्बनान् नयतीति बादरायण उभयथा च दोषात् तत्क्रतुश्च ॐ ॥ 4-3-6-540 ॥

ॐ विशेषं च दर्शयति ॐ ॥ 4-3-6-541 ॥

चतुर्थः पादः ॥4-4॥

सम्पद्याधिकरणम्॥4-4-1॥

ॐ सम्पद्याविहाय स्वेन शब्दात् ॐ ॥ 4-4-1-542 ॥

मुक्त्याधिकरणम्॥4-4-2॥

ॐ मुक्तः प्रतिज्ञानात् ॐ ॥ 4-4-2-543 ॥

आत्माधिकरणम्॥4-4-3॥

ॐ आत्मा प्रकरणात् ॐ ॥ 4-4-3-544 ॥

अविभागाधिकरणम्॥4-4-4॥

ॐ अविभागेन दृष्टत्वात् ॐ ॥ 4-4-4-545 ॥

ब्रह्मणाधिकरणम्॥4-4-5॥

ॐ ब्राह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः ॐ ॥ 4-4-5-546 ॥

ॐ चितिमात्रेण तदात्मकत्वादित्यौडुलोमिः ॐ ॥ 4-4-5-547 ॥

ॐ एवमप्युपन्यासात् पूर्वभावादविरोधं बादरायणः ॐ ॥4-4-5-548॥

सङ्कल्पाधिकरणम्॥4-4-6॥

ॐ सङ्कल्पादेव च तच्छ्रुतेः ॐ ॥ 4-4-6-549 ॥

अनन्याधिपत्यधिकरणम्॥4-4-7॥

ॐ अत एव चानन्याधिपतिः ॐ ॥ 4-4-7-550 ॥

अभवाधिकरणम्॥4-4-8॥

ॐ अभावं बादरिराह ह्येवम् ॐ ॥ 4-4-8-551 ॥

ॐ भावं जैमिनिर्विकल्पाम्नानात् ॐ ॥ 4-4-8-552 ॥

ॐ द्वादशाहवदुभयविधं बादरायणोऽतः ॐ ॥ 4-4-8-553 ॥

ॐ तन्वभावे सन्ध्यवदुपपत्तेः ॐ ॥ 4-4-8-554 ॥

ॐ भावे जाग्रद्वत् ॐ ॥ 4-4-8-555 ॥

ॐ प्रदीपवदावेशस्तथा हि दर्शयति ॐ ॥ 4-4-8-556 ॥

ॐ स्वाप्ययसम्पत्त्योरन्यतरापेक्षमाविष्कृतं हि ॐ ॥4-4-8-557॥

जगद्व्यापाराधिकरणम् ॥ 4-4-9 ॥

ॐ जगद्व्यापारवर्जम् ॐ ॥ 4-4-9-558 ॥

ॐ प्रकरणादसन्निहितत्वाच्च ॐ ॥ 4-4-9-559 ॥

ॐ प्रत्यक्षोपदेशादिति चेन्नाधिकारिकमण्डलस्थोक्तेः ॐ ॥4-4-9-560॥

ॐ विकारावर्ति च तथाहि दर्शयति ॐ ॥ 4-4-9-561 ॥

स्थित्यधिकरणम् ॥ 4-4-10 ॥

ॐ स्थितिमाह दर्शयतश्चैवं प्रत्यक्षानुमाने ॐ ॥ 4-4-10-562 ॥

अनावृत्त्यधिकरणम् ॥ 4-4-11 ॥

ॐ भोगमात्रसाम्यलिङ्गाच्च ॐ ॥ 4-4-11-563 ॥

ॐ अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात् ॐ ॥ 4-4-12-564 ॥

ॐ न वक्तुरात्मोपदेशादिति चेदध्यात्मसम्भन्धभूमा ह्यस्मिन् ॐ

ॐ इतरेतरप्रत्ययात्वादिति चेन्न उत्पत्तिमात्रनिमित्तत्वात्

श्रीकृष्णार्पणमस्तु

Sheshagiri K M